International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(II), October - December, 2021, pp.149-155

भारत में लॉकडाउनः शिक्षा की चुनौतियां एवं संभावनाएं

डॉ. संजय कुमार मण्डावत*
डॉ. चन्दन मल शर्मा**

सार

कोविड–19 व उसके नए वैरिएंट संपूर्ण विश्व में फैल गए हैं। इस वाइरस ने मानव समाज को सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए विवश कर दिया है। इसने भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की शैक्षणिक व्यवस्था के समक्ष चुनौतियां खड़ी कर दी है। शिक्षा प्रत्येक देश के आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय विषय का महत्वपूर्ण तत्व है। भारत में लगभग 32 करोड़ छात्र–छात्राओं ने लॉकडाउन के दौरान विद्यालय एवं महाविद्यालय में जाना बंद कर दिया। राज्य व केंद्र सरकारों ने सभी शैक्षणिक गतिविधियों पर अस्थाई रोक लगा दी एवं एक नई शिक्षा नीति 'ऑनलाइन शिक्षा' पर बल दिया। शिक्षा के क्षेत्र में अचानक से हुए इस परिवर्तन की वजह से छात्र–छात्राओं, अभिभावकों, शिक्षकों के समक्ष एक चुनौती बन कर उभरी है। अतः इंटरनेट के माध्यम से लैपटॉप, डेस्कटॉप, टेबलेट या स्मार्टफोन द्वारा व्हाट्सएप जूम मीट, गूगल मीट, यूट्यूब लाइव, फेसबुक लाइव आदि के माध्यम से ऑनलाइन टीचिंग लर्निंग तंत्र को मजबूत कर ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म तैयार किया जाना आवश्यक हो गया है। इसके लिए हमे मानवीय मूल्यों के अभाव में, तकनीकी के नुकसान, हैकर जैसी समस्याओं से बचकर सावधानीपूर्वक आगे बढ़ना होगा। महामारी ने शिक्षा के क्षेत्र में जो बाधा उत्पन्न कि उसे सभी ने चुनौती समझ कर शिक्षा का डिजिटलीकरण कर दिया। यह पत्र कोविड–19 महामारी एवं लॉकडाउन से शिक्षा पर पड़े सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करता है।

शब्दकोशः *कोविड–19, लॉकडाउन, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटलीकरण, सामाजिक दूरी।*

प्रस्तावना

भारत अभी कोरोना की दूसरी लहर से पूरी तरह से उभरा भी नहीं था कि कोरोना की तीसरी लहर की सुगबुगाहट तेज हो गई है। कोरोना के नए वेरिएंट ओमीक्रोन ने तीव्र गति से देश में पांव पसारने शुरू कर दिए हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में दावा किया है कि फरवरी 2022 में तीसरी लहर अपने उच्चतम स्तर पर रहेगी। जनवरी 2020 से जनवरी 2022 तक भारत में कोरोना के 3.54 करोड मामले सामने आए जिनमें 4.83 लाख लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। भारत में कोरोना के सबसे अधिक मामले महाराष्ट्र में 68.3 लाख, केरल में 52.7 लाख, कर्नाटक में 30.3 लाख, तमिलनाडु में 27.8 लाख, आंध्रप्रदेश में 20.8 लाख एवं राजस्थान में 9.66 लाख मामले सामने आए। भारत में 10 राज्य ऐसे हैं जहां पर 10 लाख से अधिक कोरोना के मामले सामने आए हैं। यदि भारत में कोरोना से हुई मृत्यु के बारे में देखें तो सर्वाधिक महाराष्ट्र में 1.42 लाख, केरल में 49.3 हजार, कर्नाटक में 38.3 हजार, तमिलनाडु में 36.8 हजार, आंध्रप्रदेश में 14.5 हजार एवं राजस्थान में 8.96 हजार मामले सामने आए हैं।

---

* सहायक आचार्य– भूगोल, डॉ बी. आर. अम्बेडकर राजकीय महविद्यालय महुवा, दौसा, राजस्थान।
** सहायक आचार्य– भूगोल, राजकीय महविद्यालय टोडाभीम, करौली, राजस्थान।

कोविड–19 ने चीन के वुहान प्रांत से शुरू होकर संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। भारत में कोरोना वायरस के मामले की पुष्टि 30 जनवरी 2020 को तब हुई जब वुहान के विश्वविद्यालय से पढ़कर छात्र भारत लौटा। इस संक्रमण को रोकने के लिए भारत में 25 मार्च 2020 से राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन लगाया गया। अति आवश्यक सेवाओं को छोड़कर सभी पर पाबन्दी लगाई गई। आवागमन के सभी साधनों पर रोक लगाई जो जहां था वहीं कैद हो गया। लॉकडाउन से संक्रमण की रफ्तार को काबू रखने में मदद मिली। भारत में 5 चरणों में लॉकडाउन लगाया गया था। प्रथम चरण 25 मार्च 2020 से 14 अप्रैल 2020 (21 दिन), द्वितीय चरण 15 अप्रैल 2020 से 3 मई 2020 (19 दिन), तृतीय चरण 4 मई 2020 से 17 मई 2020 (14 दिन), चतुर्थ चरण 18 मई 2020 से 31 मई 2020 (14 दिन) एवं पांचवा चरण 1 जून 2020 से 30 जून 2020 (30 दिन)। राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन से अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान उठाना पड़ा। एक ओर लोग जहां पहले ही बेरोजगारी से जूझ रहे थे, वहीं दूसरी तरफ कोरोना महामारी ने रोजगार में लगे हुए छोटे–मोटे धंधे बंद हो जाने से उनका रोजगार भी छीन लिया। इससे सबसे अधिक नुकसान गरीब व मजदूर वर्ग को हुआ। एक तरफ इस महामारी से मानव स्वास्थ्य पर गंभीर संकट खड़े हो गए तो दूसरी तरफ लॉकडाउन ने मानव के समक्ष सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संकट खड़े कर दिए।

इस महामारी ने शिक्षा के क्षेत्र को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है जो देश के आर्थिक भविष्य का एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार इस महामारी ने अप्रैल 2020 के मध्य विश्व की कुल छात्र आबादी के 90 प्रतिशत से अधिक को प्रभावित किया। जून 2020 यह घटकर लगभग 67 प्रतिशत तक कम हो गया। कोरोना महामारी ने विश्व में 120 करोड़ से अधिक छात्रों एवं युवाओं को प्रभावित किया है। भारत में विभिन्न प्रतिबंधों और लॉकडाउन से 32 करोड़ से अधिक छात्र प्रभावित हुए हैं यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 14 करोड प्राथमिक विद्यालयों के छात्र और 53 करोड़ माध्यमिक विद्यालय के छात्र प्रभावित हुए हैं। विश्व स्वास्थ संगठन के निर्देश अनुसार भारत में सामाजिक दूरी बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया गया। इसके लिए भारत में विभिन्न चरणों में लॉकडाउन लगाया गया जिसके तहत विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय को पूर्णता बंद कर दिया गया। कक्षाओं एवं प्रवेश परीक्षाओं समेत सभी परीक्षाएं अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गई इस प्रकार लॉकडाउन ने छात्रों के नियमित दिनचर्या को बिगाड़ दिया जिससे छात्र–छात्रों में आलस्य, लापरवाही एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ सामने आने लगी है।

उद्देश्य

- कोविड–19 महामारी में लॉकडाउन के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक पक्षों का अध्ययन करना।
- कोविड–19 महामारी में लॉकडाउन के दौरान लॉकडाउन शिक्षा के क्षेत्र में उपजी नकारात्मक चुनौतियां का अध्ययन करना।
- सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न प्रयासों व उपायों का अध्ययन करना।
- महामारी से उपजी चुनौतियों का अध्ययन कर सुझाव प्रस्तुत करना।

कार्यप्रणाली

इस पत्र में भारत में कोविड–19 महामारी से शिक्षा के क्षेत्र में भी सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों के लिए विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों तथा विभिन्न लेखकों के पत्र प्रकाशन का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत पत्र के अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। यह आंकड़े सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों से प्रकाशित एवं अप्रकाशित रूप से एकत्रित किये गए है। इस पत्र में प्रस्तुत आंकड़े एवं सूचनाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा की गई। विभिन्न रिपोर्टों, प्रमाणिक वेबसाइटों एवं पत्र–पत्रिकाओं की सामग्रियों से एकत्र की गई है।

लॉकडाउन के दौरान शिक्षा को उन्नत करने के सरकारी प्रयास

वर्तमान में विश्व कोरोना महामारी के प्रकोप से जूझ रहा है इस महामारी ने समाज को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पूर्ण रूप से प्रभावित किया है। यह वायरस भीड़ के एकत्रित होने एवं लोगों के आपसी संपर्क में आने से तीव्र गति से संक्रमण फैलाता है। केंद्र व राज्य सरकारों ने कोरोना महामारी के दौरान शिक्षा पर महामारी के प्रसार को रोकने के लिए कई निवारक उपाय किए। सरकार ने कोरोना वायरस की दस्तक के साथ ही 16 मार्च 2020 में देश के सभी शिक्षण संस्थाओं को बंद करने की घोषणा कर दी गई। इस महामारी के कारण सीबीएसई बोर्ड सहित अधिकांश राज्य सरकारों और अन्य शैक्षणिक बोर्डों एवं विश्वविद्यालयों ने परीक्षाएं स्थगित कर दी गई। देश के सभी सरकारी व गैर सरकारी क्षेत्रों में भी शैक्षणिक एवं साक्षात्कार की सभी प्रक्रिया पूर्णतः स्थगित कर दी गई। केंद्र व राज्य सरकारों ने समय–समय पर कोविड–19 से निपटने के लिए विविध क्षेत्रों के साथ–साथ शैक्षणिक कार्यों में भी दिशानिर्देश जारी किए। इसी के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षा आयोजित करने के निर्देश दिए गए। लॉकडाउन ने ऑनलाइन शिक्षा पर सभी वर्ग के लोगों का ध्यान खींचा गया। ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसी नवीन शिक्षा पद्धति है जिसमें शिक्षक व बच्चों को क्लास रूम में बैठे रहने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि अपने अपने घर में बैठकर इंटरनेट के माध्यम से लैपटॉप, डेस्कटॉप, टेबलेट या स्मार्टफोन उपकरणों के जरिए अपनी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इस प्रणाली में सबसे अच्छी बात यह है कि आप किसी भी शिक्षक की कक्षाएं कहीं पर भी बैठ कर ले सकते हैं। कॉलेजों में स्कूलों के बंद होने से मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने डायरेक्ट टू होम के माध्यम से ऑनलाइन शैक्षणिक चौनलों सहित कई व्यवस्थाएं की हैं। छात्र लॉकडाउन के दौरान व्हाट्सएप, जूम मीट, वेबएक्स मीट, गूगल मीट, यूट्यूब लाइव, फेसबुक लाइव इत्यादि के माध्यम से ऑनलाइन टीचिंग लर्निंग सिस्टम का इस्तेमाल कर रहे हैं। केंद्र व राज्य सरकार में कोविड 19 के दौरान माध्यमिक व उच्च शिक्षा के लिए लर्निंग प्लेटफॉर्म तक बच्चों की पहुंच बढ़ाने के प्रयास शुरू कर दिए हैं।

इस दौरान राष्ट्रीय स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा मंच 'स्वयं' पोर्टल पर छात्रों की पहुंच में 5 गुना वृद्धि दर्ज देखी गई इस पोर्टल को लगभग ढाई लाख से अधिक लोगो द्वारा एक्सेस किया गया 'स्वयं' पोर्टल पर उपलब्ध 574 पाठ्यक्रमों में करीब 26 लाख छात्र नाम अंकित है। इसके अलावा सरकार द्वारा संचालित 'स्वयं प्रभा' टीवी चौनल शैक्षिक सामग्री प्रसारित करता है। यह चैनल डीटीएच चैनल है जो पूरे देश में देखने के लिए एक मुफ्त चैनल है। यह चैनल स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रमों को कवर करता है। यह चैनल वाणिज्य, प्रदर्शन कला, सामाजिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कानून चिकित्सा, कृषि आदि के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाता है। केंद्र सरकार द्वारा 'दीक्षा' पोर्टल के तहत प्रथम कक्षा से लेकर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट तक की पढ़ाई इस पोर्टल के माध्यम से करवाई जाती है, साथ ही इसमें शिक्षकों के प्रशिक्षण से संबंधित अध्ययन सामग्री भी उपलब्ध है।

लॉकडाउन के दौरान एनसीईआरटी द्वारा 'ई–पाठशाला' लर्निंग एप्प शुरू किया गया है। इस लर्निंग एप्प में कक्षा 1 से 12वीं तक की पुस्तकों को हिंदी, उर्दू एवं अंग्रेजी सहित कई भाषाओं में अपलोड कर दिया गया है। इस एप्प के माध्यम से पाठ्य पुस्तकों, ऑडियो, वीडियो, पत्रिकाओं सहित सभी शैक्षणिक सामग्री तक छात्र, शिक्षक एवं अभिभावकगणों की पहुंच को बढावा दिया जा रहा हैं। एमएचआरडी द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों का राष्ट्रीय भंडार (एन. आर. ओ. ई. आर.) प्रोजेक्ट के तहत लॉकडाउन के दौरान देश के छात्र और शिक्षक के लिए बेहतर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तैयार किया है।

एमएचआरडी द्वारा 'ई–पीजी पाठशाला' की शुरुआत पोस्टग्रेजुएट छात्रों के लिए शुरू किया है। इस एप्प के माध्यम से लॉकडाउन के दौरान स्नातकोत्तर छात्र पुस्तकों का अध्ययन कर पाएंगे। इस प्लेटफार्म की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे बिना इंटरनेट के पूरे दिन एक्सेस किया जा सकता है। भारत सरकार द्वारा कोविड–19 में लॉकडाउन के दौरान छात्रों को निर्बाध रूप से सहायता सेवा उपलब्ध कराने की पूरी कोशिश की गई है। कोविड–19 महामारी ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को पारंपरिक पद्धति से निकाल कर एक नए युग में प्रवेश करने का सुनहरा अवसर प्रदान किया है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में लॉकडाउन के दौरान नई शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस की गई। यहाँ हम लॉकडाउन के दौरान शिक्षा के सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों का अध्ययन करेंगे।

शिक्षा पर कोविड–19 का सकारात्मक प्रभाव

लॉकडाउन में शिक्षा जगत में डिजिटल क्रांति के लिए द्वार खोल दिए हैं। केंद्र सरकार ने डिजिटल इंडिया के विस्तार में लॉकडाउन ने महती भूमिका निभाई। अब डिजिटल लर्निंग के विस्तार से विद्वान, अध्यापकों व सुदूर क्षेत्र में रह रहे विद्यार्थियों के बीच की दूरियां भी कम हुई। इससे डिजिटल कंटेंट की बढ़ती मांग देश में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर प्रदान करेगी। कोविड–19 ने 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा को और अधिक मजबूत किया है। वैश्विक महामारी में लॉकडाउन के दौरान पूरी दुनिया को अपने अपने घरों में कैद कर दिया था। लॉकडाउन में विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित न हो इसके लिए देश भर में ऑनलाइन शिक्षा के लिए ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, डिजिटल लाइब्रेरी एवं एजुकेशन चौनलों तक छात्रों व अभिभावकों की पहुंच सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। ऑनलाइन शिक्षा घर पर बैठकर शिक्षक से जूम मीट, गूगल मीट इत्यादि एप्प के माध्यम से जुड़ कर बेहतर सुविधाजनक तरीके से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली स्कूल शिक्षा प्रणाली से सस्ती व सरल है। इसमें स्कूल एवं कोचिंग में जाने एवं वापस आने के परिवहन व अन्य खर्चों को कम करता है। साथ ही इससे स्कूल के अन्य खर्चों में कमी आती है। ऑनलाइन शिक्षा के कारण बच्चों के समय की बचत हुई है क्योंकि स्कूल बस में जाने से लेकर वापस घर आने तक बहुत समय खर्च करना पड़ता था। अधिकांश समय बच्चों का स्कूल बस में ही निकल जाता था। बच्चों को अपने परिवार के साथ अधिक समय बिताने का अवसर भी मिला।

ऑनलाइन कक्षा लेते समय बच्चा हमेशा अपने माता या पिता की निगरानी में रहता है। ऑनलाइन शिक्षा से माता–पिता समय व धन की बचत कर पा रहे हैं। ऑनलाइन क्लास से बच्चों की शिक्षा पर मौसम का प्रभाव नहीं पड़ता है। भारत एक भौगोलिक विविधता पूर्ण देश है जहां कहीं अधिक सर्दी, गर्मी या वर्षा का मौसम रहता है। इससे बच्चों की शिक्षा पर असर पड़ता है किंतु ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था ने मौसम के प्रभाव को पूर्णता समाप्त कर दिया। इस नई व्यवस्था से बच्चे स्मार्टफोन, कंप्यूटर लैपटॉप एवं टेबलेट के माध्यम से अपनी शिक्षा कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा से बच्चों को तकनीकी जानकारी का भी ज्ञान प्राप्त हो रहा है जो वर्तमान डिजिटल युग की आवश्यकता है।

बच्चों को ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा संबंधी ज्ञान वीडियो के माध्यम से अधिक कंटेंट के साथ उपलब्ध हो रहे है जिससे बच्चों को तैयारी करने व समझने में आसानी हो रही है। ऑफलाइन शिक्षा में बच्चों के अभिव्यक्त करने की झिझक रहती थी। इसे ऑनलाइन शिक्षा ने काफी हद तक कम कर दिया है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक अपना श्रेष्ठ करने की कोशिश करता है क्योंकि इस अध्यापन व्यवस्था में छात्र व शिक्षक के साथ–साथ अभिभावकों की भी नजर रहती है। वे देख सकते हैं कि अध्यापन कार्य से बच्चे को अच्छी शिक्षा मिल रही है या नहीं। ऑनलाइन शिक्षा में आवश्यक नहीं है कि आप घर पर ही रहे। इसे कहीं पर भी देखकर प्राप्त कर सकते हैं। इसमें तुरंत व्याख्यान की समीक्षा भी कर सकते हैं। इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का महत्व प्राकृतिक आपदा या आपातकाल जैसे विकट परिस्थितियों में और अधिक बढ़ जाता है। इसका उदाहरण हमारे सामने कोरोना महामारी के रूप में सामने आया है। इसके प्रभाव से बचने के लिए सभी प्रयत्नशील है। इस समय अधिकांश स्कूलों में छात्र हित को देखते हुए ऑनलाइन अध्ययन की प्रक्रिया को अपना रहे हैं वास्तव में ऑनलाइन अध्ययन की प्रक्रिया स्कूली शिक्षा के लिए एक बेहतर व सुरक्षित विकल्प बनकर उभरा है। इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षा सरल व तनाव रहित होकर सीखने की प्रक्रिया है। इसमें केवल आपको सीखने का जुनून होना अति आवश्यक है। ऑनलाइन द्वारा आजकल लोग दफ्तरों के कार्य घर बैठ कर रहे हैं। जो अभिभावक अपने बच्चों को बाहर पढ़ने के लिए नहीं भेज सकते, उनके लिए यह शिक्षण प्रणाली बेहतर है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में व्यक्ति सिर्फ माध्यमिक व उच्च शिक्षा ही प्राप्त नहीं करता बल्कि विभिन्न प्रकार के मार्केटिंग कोर्स घर बैठे कर सकता है।

शिक्षा पर कोविड–19 का नकारात्मक प्रभाव

ऑनलाइन अध्ययन की प्रक्रिया में सकारात्मक पक्ष के अलावा कुछ नकारात्मक पक्ष भी देखने को मिले है। ऑफलाइन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक बच्चों को नैतिक शिक्षा प्रदान करता है जबकि ऑनलाइन में नैतिक

शिक्षा का पूर्णतया अभाव पाया जाता है। एक स्कूल में बच्चा हमेशा अनुशासन में रहता है। वह एक निर्धारित समय में अपना अध्यापन व गृह कार्य पूर्ण करता है। ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक सभी बच्चों को अनुशासन का पालन नहीं करा पाते हैं। ऑफलाइन शिक्षा में जिस तरह शिक्षक एवं छात्रों के मध्य उत्साह का वातावरण होता है। ऑनलाइन शिक्षा में उसका अभाव होता है। ऑनलाइन स्कूल में क्लास रूम जैसा माहौल प्रदान नहीं करता है जिसमें छात्र शिक्षक आपस में आमने–सामने होते हैं। यदि छात्र सीखने की रुचि नहीं रखता है, बिना कहे पढ़ाई नहीं करता है तो उसके लिए ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली नुकसान देह है। ऑनलाइन कक्षा में विषय संबंधित टॉपिक पर चर्चा की जाती है जबकि ऑफलाइन कक्षा में शिक्षक अपने निजी अनुभव तथ्यों और जोक्स को भी शामिल करता है जिससे छात्रों की समझ विकसित हो होती है एवं शिक्षकों छात्रों के मध्य अध्यापन का बेहतर संबंध स्थापित हो जाता है। इसमें कक्षा का माहौल आनंद में रहता है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यही है कि लगातार इलेक्ट्रॉनिक स्क्रीन के सामने बैठे रहने से छात्रों व शिक्षकों के स्वास्थ्य संबंधी समस्या पैदा हो रही ळे, जिससे सिर दर्द, आंखों में भारीपन, चिड़चिड़ापन, अनिंद्रा, उदासी जैसी बीमारियों की गिरफ्त में आ जाते हैं। शरीर के साथ बच्चों की मन स्थिति पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है यदि बच्चा 4 से 6 घंटे से ज्यादा समय तक स्क्रीन पर रहता है तो उसके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। इससे बच्चों में आत्मसंयम व जिज्ञासा में कमी आती है। इसके अलावा कमजोरी महसूस होना, भावनात्मक स्थिरता व ध्यान केंद्रित करने में परेशानी आने लगती है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में बच्चे के व्यवहार में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण में शिक्षक लगातार निरीक्षण नहीं कर पाते हैं। ऑफलाइन व्यवस्था में क्लास रूम में शिक्षक बच्चों की कॉपी चेक करते हैं। उनसे सवाल–जवाब कर सकते हैं। इससे बच्चे अध्यापन के प्रति गंभीर रहते हैं। क्लास रूम में शिक्षक बच्चों की हर गतिविधियों पर नजर रखते हैं। बच्चे हर समय शिक्षक के आई कांटेक्ट में बना रहता है ऑनलाइन व्यवस्था में इसका अभाव रहता है। शिक्षक कक्षा में आपकी बोलचाल और आपकी प्रतिक्रिया देखकर समझ सकता है कि आप विषय को कितना समझ सकते हैं। इसके अलावा ऑनलाइन पेपर देने में नकल की संभावनाएं अधिक बनी रहती है। कोविड–19 के कारण केंद्र व राज्य सरकारों ने अधिकांश भर्तियों को स्थगित कर दिया और छात्रों के लिए प्लेसमेंट भी प्रभावित हुआ है क्योंकि कंपनियां प्लेसमेंट बोर्ड में देरी कर रही है। इस महामारी ने बेरोजगारी को बढ़ावा दिया है। जब बेरोजगारी बढ़ती ळे, तब शिक्षा के बजाय लोग भोजन के लिए संघर्ष करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा कोविड–19 के कारण अचानक थोपी गई शिक्षा प्रणाली है जिसके लिए शिक्षक और छात्र व उनके अभिभावकगण तैयार नही है। अधिकांश शिक्षक बिना प्रशिक्षण के वीडियो प्लेटफार्म पर व्याख्यान का आयोजन कर रहे हैं जो कि वास्तविक ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के विपरीत है।

आर्थिक रूप से कमजोर व गरीब वर्ग के लोगों को उपकरणों और हाई स्पीड इंटरनेट डाटा की कमी के कारण ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। जिन गरीब परिवारों में दो या दो से अधिक बच्चे हैं उनके घर में फोन एक है जिससे वे बच्चे ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को नहीं अपना पा रहे हैं। लॉकडाउन के दौरान छात्राओं को जटिल समस्या का सामना करना पड़ा। लॉकडाउन में छात्राओं के सामने घरेलू जिम्मेदारियां बढ़ गई। लॉकडाउन से पूर्व छात्राएं घर पर सारे घरेलू काम करके स्कूल जाती थी किंतु लॉकडाउन ने पढ़ाई का एकमात्र समय भी उनसे छीन लिया कोरोना महामारी एवं ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था ने उनसे सीखने की प्रक्रिया का यह मार्ग भी बाधित कर दिया। कोरोना शिक्षण संस्थानों के खुलने पर सबसे ज्यादा खतरा विद्यार्थियों के लिए है। मगर बंद रहने से अनेक कॉलेज एवं इंस्टिट्यूट का अस्तित्व समाप्त होने के कगार पर पहुंच चुका है ऑनलाइन शिक्षा की पहुंच प्रत्येक छात्र तक नहीं होना व सुदूर क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं हो पाना भी ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था की मुख्य कमियों में से एक माना गया है।

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षा के नकारात्मक एवं सकारात्मक पहलू अवश्य है लेकिन यह भी सही है कि लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन शिक्षण पद्धति ने छात्रों, शिक्षकों और शिक्षण संस्थानों की काफी मदद की है। इस पद्धति ने

शिक्षा के आदान–प्रदान को इस कठिन वक्त में भी बाधित नहीं होने दिया। वर्तमान में प्रौद्योगिकी ने इतनी उन्नति कर ली है कि हम घर से और दुनिया के किसी भी कोने से बैठकर इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं किंतु भारत में आर्थिक, सामाजिक, डिजिटल एवं शैक्षणिक असमानताएं विद्यमान है जिसमें ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली को अपनाने के लिए इन असमानता की खाई को पाटने की जरूरत है जो मजदूरों शहरों से अपने मूल स्थान पर प्रवास कर गये हैं उनके लिए केंद्र और राज्य सरकारों को रोजगार व उनके बच्चों के लिए शिक्षा का रोडमैप बनाने की आवश्यकता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी और उससे संबंधित सुविधाओं के लिए केंद्र सरकार को राज्यों के बुनियादी ढांचे में परिवर्तन करना चाहिए। युवा व बुजुर्गों के लिए बूस्टर डोज एवं छोटे बच्चों को वैक्सीन लगाकर इस महामारी के संकट से लड़ने की तैयारी करनी होगी।

भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षा को देश के सभी कोनों तक पहुंचाने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं है। शैक्षणिक संस्थानों के लिए यह समय की आवश्यकता है कि वे अपने ज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के बुनियादी ढांचे को मजबूत करें ताकि वे कोविड–19 जैसी स्थितियों का सामना करने के लिए तैयार रहें। ऑनलाइन शिक्षा के अधिकतम उपयोग के लिए प्रयास करने की तत्काल आवश्यकता है, ताकि छात्र न केवल इस शैक्षणिक वर्ष में अपनी डिग्री पूरी कर सकें बल्कि भविष्य के डिजिटल उन्मुख वातावरण के लिए भी तैयार हो सकें। कोविड–19 के प्रसार को कम करने के लिए ऐसी महामारी की स्थिति में वर्क फ्रॉम होम की अवधारणा की अधिक प्रासंगिकता है। भारत को यह सुनिश्चित करने के लिए रचनात्मक रणनीति विकसित करनी चाहिए। वर्चुअल लर्निंग टूल्स के लिए विशेष रूप से उन्नत सुरक्षात्मक उपायों के साथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म सुनिश्चित किए जाने चाहिए। उपकरणों में नवीनतम सॉफ्टवेयर एवं अपडेट एंटीवायरस प्रोग्राम होना चाहिए, अन्यथा कोई डिजिटल उपकरणों को हैक कर सकता है। समाज के गरीब और वंचित समूहों सहित सभी के लिए ऑनलाइन शिक्षा सस्ती नहीं है। सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानों द्वारा वंचित समूहों और कम आय वर्ग वाले परिवारों के छात्रों को ध्यान में रखते हुए सस्ती व सुगम हाई स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उपलब्ध करवाया जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए शैक्षणिक गतिविधियों को जारी रखने के लिए सरकार और शैक्षणिक संस्थानों को योजना बनानी चाहिए। ऑनलाइन सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार एवं शैक्षणिक संस्थानों को सभी शिक्षार्थियों को मुफ्त इंटरनेट और मुफ्त डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक उपकरण प्रदान करने की नीति अपनानी चाहिए, जिसके परिणामस्वरूप लोग लॉकडाउन और महामारी के दौरान सुरक्षित रह सकें ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Desikan, S.; June 05, 2021; Hope embedded in despa. https://www.thehindu.com/education/role-of-online-education-offer-valuable-insights-on-the-way-forward-for-higher-education/article34735487.ece.
2. Government of India Ministry of Education Department of School Education & Literacy; Compilation of Initiatives/Actions taken to mitigate the effect of Covid-19 pandemic on education of school children. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/ mhrd/files/DOSEL_COMPILATION_ON_COVID_ACTIVITIES.pdf.
3. HRD announces guidelines for online classes, recommends cap on number of sessions ; Jul 14, 2020 The Economic Times. https://economictimes.indiatimes.com/industry/services/education/hrd-announces-guidelines-for-online-classes-recommends-cap-on-number-of sessions/articleshow/76961155.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst.
4. K.,Viney September 04, 2021; For better or for worse? The Hindu https://www.thehindu.com/education/what-the-past-18-months-of-online-teaching-has-been-like-for-students-and-teachers/article36291715.ece.

5. Magomedov, I. A., Khaliev, M. S.U and Khubolov, S. M. ; (Oct. 8, 2020); The negative and positive impact of the pandemic on education; Journal of Physics: Conference Series; IOP Publishing Ltd., Volume-1691.

6. MHRD, Covid Response in School Education: Action Plan For Access, Retention, Continous Learning, Capacity Building And Stakeholder Engagement; 31-May-2021

7. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Covid_Action_Plan.pdf

8. Rawal, Mukesh; An analysis of COVID-19 Impacts On Indian Education System. Educational Resurgence Journal Volum2,Issue 5,Jan.2021;ISSN 2581-9100

9. https://coed.dypvp.edu.in/educational-resurgence-journal/documents/jan-2021/35-40.pdf

10. UNICEF. Children at increased risk of harm online during global COVID-19 pandemic. Retrieved on April 16, 2020https://www.unicef.org/turkey/en/press-releases/children increased- risk- harm-online-during-global-covid-19-pandemic.

11. परवीन, डॉ. नाज; कोरोना महामारी और शिक्षा : शिक्षा को बचाने की चुनौती समाज के सामने अगला संकट; सितम्बर 23, 2020; अमर उजाला।

12. https://www.amarujala.com/columns/blog/coronavirus-impact-on-education-system-in-india-covid-19-effects-on-education-in-india.

❖◆❖